प्रातः क्लास 29-5-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। अभी बच्चे भी हैं, बाबा भी है। बाबा अनेक बच्चों को कहेंगे ओ बेटे। सभी बच्चे फिर कहेंगे ओ बाबा। बच्चे हैं बहुत। तुमसमझते हो यह ज्ञान हम आत्माओं के लिए ही है। एक बाप के कितने ढेर बच्चे हैं। बच्चे जानते हैं बाप पढ़ाने आये हैं। वह पहले2 बाबा है, फिर टीचर है फिर गुरु है। अब बाप तो बाप ही है। सारा दिन साथ रहते ही हैं। फिर समय पर आकर पुण्यात्मा पवित्र बनने लिए याद की यात्रा सिखलाते हैं। बाप आकर पढ़ाते हैं। और यह सभी बच्चे समझते हैं यह पढ़ाई वन्डरफुल है। बाप बिगर कोई समझा न सके। ड्रामा के आदि मध्य अन्त का राज़, 84 जन्मों के चक्र का राज़, सिवाय बाप के कोई बता न सके। इसलिए इनको बेहद का बाप कहा जाता है। यह निश्चय तो बच्चों को जरूर बैठा है इसमें संशय की बात नहीं उठ सकती। इतनी बेहद की पढ़ाई बेहद के बाप के सिवाय तो कोई पढ़ा न सके। बुलाते भी हैं बाबा आओ हमको पावन दुनिया में ले चलो। क्योंकि यह है पतित दुनिया। बाप ही पावन दुनिया में ले जाते हैं। वहां थोड़े ही कहेंगे बाबा आओ। पावन दुनिया में ले जाओ। बच्चे जानते हैं हम आत्माओं का वह बाप है। तो देह का भान टूट जाता है। आत्मा कहती है वह हमारा बाप है। अभी यह तो निश्चय रहना चाहिए बराबर बाप बिगर इतनी नालेज कौन दे सके। पहले तो यह निश्चय बुधि चाहिए। निश्चय भी आत्मा की बुधि को होता है। आत्मा को ज्ञान मिलता है हमारे यह बाबा है। यह बहुत पक्का निश्चय बच्चों को होना चाहिए। मुख से कहना कुछ भी नहीं है। हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती हैं। आत्मा में ही सब संस्कार हैं। अभी तुम जानते हो बाबा आया हुआ है। हमको ऐसा पढ़ाते हैं कर्म सिखलाते हैं, जो हम इस दुनिया में आवेंगे ही नहीं। वह मनुष्य तो समझते हैं इस दुनिया में आना है। तुम ऐसे नहीं समझते हो। तुम यह अमर कथा सुन रहे हो। अमर कथा का [illegible] होना चाहिए ना। अमर पूरी [illegible] त्रेता आदि पूरी। बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। यह पढ़ाई सिवाय बाप के कोई पढ़ा न सके। बाबा हमको पढ़ाते हैं। और जो भी [illegible] वह तो सभी आर्डीनरी मनुष्य हैं। पढ़ाने वाले। यहां तुम जिसको पतित पावन कहते हो, बाबा आकर [illegible] सुखदाई। जो बाप तुमको एमरुख अभी पढ़ा रहे हैं। एमरुख होने बिगर राजयोग की पढ़ाई कैसे पढ़ावेंगे। बाप कहते हैं तुम स्वीट बच्चों को यहां पढ़ाने आता हूं। पढ़ाने लिए इन में प्रवेश करता हूं। है भी बराबर भगवानुवाच तो जरूर उनको शरीर चाहिए ना। न कि सिर्फ मुख परन्तु सारा शरीर चाहिए। खुद कहते हैं मीठे2 रूहानी बच्चों मैं कल्प2 पुरुषोत्तम संगम युग पर आता हूं। इस साधारण तन में आता हूं। बहुत गरीब भी नहीं तो तो बहुत शाहूकार भी नहीं। साधारण है। यह तो बच्चों को निश्चय होना चाहिए वह हमारा बाबा है। हम आत्मा हैं। हम आत्माओं का बाबा है। सारी दुनिया जो भी मनुष्य मात्र हैं की आत्मायें हैं उन सभी का बाबा है। इसलिए उनको बेहद का बाबा कहा जाता है। शिवजयन्ति मनाते हैं उसका भी किसको पता नहीं। कोई से भी पूछो शिवजयन्ति कब से मनाई जा रही है कहेंगे परम्परा से। वह भी कब, कोई डेट तो होनी चाहिए ना। ड्रामा तो अनादी है। परन्तु एक्टविटी जो ड्रामा में होती है उनकी तिथ तारीख तो चाहिए ना। यह तो कोई भी नहीं जानते। हमारा शिव बाबा आते हैं तो उस तब से जयन्ति नहीं मनाते हैं। नेहरू की जयन्ति उस तब से मनावेंगे। आंसू भी आ जावेंगे। शिवजयन्ति का किसको भी पता नहीं। अभी तुम बच्चे अनुभवी हो। अनेक मनुष्य हैं जिनको कुछ भी पता नहीं। कितने मेले आदि लगते हैं। वहां जो जाते हैं वह बता सकते हैं कि सच्च क्या है। जैसे बाबा ने अमरनाथ का भी मिशाल बताया था वहां जाकर देखा सच्च2 क्या होता है। दूसरे तो औरों द्वारा जो सुनते हैं वह बतलाते हैं। कोई ने कहा बर्फ का लिंग होता है, कहेंगे सत्य। अभी तुम बच्चों को अनुभव मिला हैराईट क्या है, रांग क्या है। भक्ति मार्ग में जो कुछ सुनते पढ़ते आये वह सभी हैं अनराईटियस। गायन है झूठी माया... यह है ही झूठ खण्ड। वह है सच्च खण्ड सतयुग। यह कलियुग। नाम ही अलग है। इनको झूठ

तुम जानते हो। और कोई नहीं जानते। सतयुग, त्रेता द्वापर पास्ट हुआ अभी कलियुग चल रहा है। यह भी बहुत थोड़े ही जानते हैं। तुम्हारी बुधि में सब ख्यालात रहती हैं। बाप के पास सारी नालेज है। तुमको कहते हैं ज्ञान का सागर। उनके पास जो नालेज है वह इस तन द्वारा दे हमको आप समान बना रहे हैं। जैसे टीचर भी आप समान बनाते हैं ना। तो बेहद का बाप भी कोशिश कर आप समान ही बनाते हैं। लौकिक बाप आप समान नहीं बनाते हैं। वह तो टीचर के हाथ वा गुरु के हाथ दे देंगे आप समान बनाने को। वह सभी हैं हद की बातें। तुम अभी आये हो बेहद के बाप पास। वह जानते हैं मुझे बच्चों को आप समान बनाना है। जैसे टीचर आप समाना टीचर बनावेंगे। बैरिस्टर कहेंगे हम आप समान बैरिस्टर बनाते हैं। अन्दर में जानते हैं सब तो आपस मान नहीं बनेंगे। नम्बरवार ही होंगे। यह बाप भी ऐसे कहते हैं नम्बरवार बनेंगे। मैं जो पढ़ाता हूं यह है अविनाशी पढ़ाई। जो जितना पढ़ेंगे वह व्यर्थ नहीं जावेगा। आगे चल कर खुद कहेंगे हम चार वर्ष आगे आठ वर्ष आगे कोई से यह ज्ञान सुना था अभी फिर आया हूं। फिर कोई चटक पड़ते हैं। शा तो है फिर उस पर तो कोई परवाने एकदम फिदा हो जाते हैं कोई तो फ्री पहन चले जाते हैं। शुरु में शमा पर बहुत परवाने आशुक हो पड़े ड्रामा प्लेन अनुसार। भट्ठी बननी थी। कल्प2 ऐसे ही होता आया है। तो जो कुछ पास्ट हुआ कल्प पहले भी हुआ था। आगे भी फिर वही रिपीट होगा। बाकी यह पक्का निश्चय रखो हम आत्मा हैं। बाप हमको पढ़ाते हैं। इस निश्चय में पक्के रहो। भूल न जाओ। ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जो बाप को न समझे। भल फारकती दे देगा तो भी समझेंगे हम बाप को फारकती दे दी। यह तो बेहद का बाप है। उनको तो हम कभी भी नहीं छोड़ेंगे। अन्त तक साथ रहेंगे। यह बाप तो सभी की सदगति करने वाला है। [illegible] समझते हैं कलियुग में बहुत ही थोड़े मनुष्य होते हैं। बाकी सभी शान्तिधाम में रहते हैं। यह नालेज भी वही बाप सुनाते हैं। और कोई सुना न सके। किसकी बुधि में बैठ न सके। तुम आत्माओं का वह बाप है। सृष्टि के आदि मध्य अन्त की भी उनको नालेज है। वह चैतन्य बीज रूप है। क्या नालेज देंगे। सृष्टि रूपी झाड़ की। रचयिता जरूर रचना के आदि मध्य अन्त का नालेज देंगे। तुम थोड़े ही जानते थे। तुमको पता था क्या सतयुग कब था, फिर कहां गया। कोई को भी नालेज नहीं। अभी तुम सामने बैठे हो। बाबा बात कर रहे हैं। पक्का निश्चय करते हो हम सभी आत्माओं का बाप है। हमको पढ़ा रहे हैं। यह कोई जिस्मानी टीचर नहीं। इस शरीर में पढ़ाने वाला वह निराकार शिव बाबा विराजमान है। वह निराकार होते भी यहां ज्ञान का सागर है। मनुष्य तो कह देते उनका कोई आकर नहीं। इतने पत्थर बुधि हो गये हैं। महिमा भी गाते हैं ज्ञान का सागर सुख का सागर... परन्तु समझते नहीं हैं। ड्रामा अनुसार बहुत दूर चले गये हैं। बाप बहुत नज़दीक ले आते हैं। यह तो 5000 वर्ष की बात है। तुम समझते हो बाबा हर 5000 वर्ष बाद हमको पढ़ाने आते हैं। यह भी समझते हो पुरानी सो नई, नई सो पुरानी होती है। जो पवित्र थे वही 84 जन्म ले पतित बनते हैं फिर वही पावन बनेंगे। यह सृष्टि का चक्र बाप ही समझाते हैं। यह नालेज और कोई से मिल न सके। यह नालेज है ही नई दुनिया के लिए। कोई मनुष्य तो दे न सके। क्योंकि सभी तमोप्रधान हैं। तमोप्रधान आत्मा किसको सतोप्रधान बना न सके। वह तो तमोप्रधान बनते जाते हैं। सृष्टि के आदि मध्य अन्त को कोई भी नहीं जानते। अभी तुम समझते हो हम फिर से जान रहे हैं। बाबा इन में प्रवेश कर हमको बता रहे हैं। और फिर बाप कहते हैं बच्चे गफ्लत न करना। दुश्मन अभी भी तुम्हारे पीछे हैं। जिसने ही तुमको गिराया है। वह अभी तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेंगी। तुम खबरदार न रहेंगे तो याद न करेंगे तो फिर और ही विकर्म करा देंगी। फिर कुछ न कुछ चमाट ल जावेंगी। अभी देखो आसुरी मत अपने को ऐसी चमाट मारी है क्या2 कर दिया है। शिव शंकर इकट्ठा कह देते। उनका आक्युपेशन क्या उनका क्या। कितना फर्क है। शिव तो है ऊंच ते ऊंच भगवान। शंकर देवता। फिर शिव शं

इकट्ठा कैसे कह देते। शंकर के लिए कहते हैं विनाश करता है। वह अलग। फिर दोनो को इकट्ठा क्यों कर दिया। पार्ट ही दोनो का अलग2 हैं। यहां भी बहुतों के ऐसे नाम हैं। राधे, कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण, शिव-शंकर। दोनो ही नाम सिर पर रख दिये हैं। तो बच्चे यह समझते हैं इस समय तक बाप ने जो समझाया है वह फिर भी रिपीट होगा। बाकी थोड़ी रोज हैं। बाप बैठ थोड़ी ही जावेंगा। बच्चे नम्बरवार पढ़ कर जावेंगे और कर्मातीत पूरे बने जावेंगे। अनुसार माला भी बन जावेंगी। कौन सी माला? सभी आत्माओं की माला बन जावेंगी। तब फिर सभी वापस आवेंगे। माला नम्बरवन तो तुम्हारी है। शिव बाबा की माला तो बड़ी लम्बी है। वहां से नम्बरवार आवेंगे पार्ट बजाने। सभी बाबा बाबा कहते हो। सभी एक माला के दाने हैं हो। सभी विष्णु की माला का दाना नहीं कहेंगे। यह बाप बैठ पढ़ाते हैं। सूर्यवंशी बनाना ही है। सूर्यवंशी -चन्द्रवंशी जो पास्ट हो गये हैं वह फिर बनेंगे। वह मर्तबा मिलता ही है पढ़ाई से। बाप की पढ़ाई बिगर यह मर्तबा मिल सके। चित्र भी हैं। परन्तु कोई भी ऐसा एसपेक्ट नहीं करते हैं कि हम यह बन सकते हैं। कथाएं भी सत्य नारायण की सुनते हैं। परन्तु समझते नहीं कि हम नर से नारायण बनेंगे। सिर्फ ऐसे ही जाकर सुनते हैं। क्योंकि समझते हैं न सुनेंगे तो बेरा डूब जावेगा। यह होगा भक्ति मार्ग है ना। बहुत ही डर की रोचक बातें मनुष्यों को सुनाते हैं। गरुड़ पुरान में सभी ऐसे ही बातें हैं। बाप कहते हैं यह विषय वैतरणी नदी रौरव नर्क है। खास भारत को कहेंगे। बृस्पत की दशा भी बैठ ती है भारत पर। बृक्षपति भारतवासियों को ही बैठपढ़ाते हैं। बेहद का बाप बैठ बेहद की बातें समझाते हैं। दशा बैठती है ना राहू। इसलिए फिर कहते हैं वे दान तो छूटे ग्रहण। बाप भी कहते हैं इस कलियुग के अन्त में राहू की दशा सभी पर है। अभी मैं बृक्षपति आया हूं भारत पर बृक्षपत की बैठाने। सतयुग में बृक्षपत की दशा भारत पर थी। अभी राहू की दशा है। यह बेहद की बातें कोई शास्त्रों आद में नहीं हैं। तुम मैगजीन आद बैठ लिखते हो, वह भी जो कुछ न कुछ भट्ठी में पड़े होंगे उनको मैगजीन मिलनेसे कुछ समझ में आवेगा। वह फिर जास्ती समझने लिए भागेंगे। बाकी तो कुछ भी नहीं समझेंगे। जो थोड़ा पढ़ कर फिर छोड़ देते हैं तो फिर थोड़ा भी ज्ञान घृत उन में डालने से फिर सुजाग हो पड़ते हैं। ज्ञान को घृत भी कहा जाता है। बूझी हुई दीवे में बाप अभी ज्ञान घृत डाल रहे हैं। कहते हैं बच्चे माया के तूफान तो बहुत ही आवेंगे दीवे को बूझा देंगी। शमा पर परवाने कोई तोजल मरते हैं, कोई पंख पहन कर चले जाते हैं। वही बात अभी प्रेक्टीकल में चल रही है। नम्बरवार सभी परवाने हैं। पहले2 एकदम परिवार छोड़कर आये। परवाने बने। जैसे लाटरी मिल गई एकदम। कोई तो पेट में भी बच्चे ले आये। जो कुछ पास्ट हुआ फिर तुम ऐसे ही करेंगे। भल चले गये। ऐसे मत समझना स्वर्ग में नहीं आवेंगे। परवाने बने, आशुक हुये फिर माया ने हराया तो पद कम हो जावेगा। नम्बरवार तो होते ही हैं। और सतसंगों में कोई को बुधि में नहीं होगा। तुम्हारी बुधि में है हम बाप से नईदुनिया के लिए पुरुषार्थ अनुसार पढ़ रहे हैं। हम बेहद के बाप के सम्मुख बैठे हैं। यह भी जानते हो वह आत्मा देखने में नहीं आती। वह तो अव्यक्त चीज है। उनको दिव्य दृष्टि द्वारा ही देखा जा सकता है। हम आत्मा भी छोटी बिन्दी हैं। परन्तु देह अभिमान छोड़ अपने को आत्मा समझना यह है ऊंची ते ऊंची पढ़ाई। उस पढ़ाई में जो भी डिफिकल्ट सबजेक्ट है उनमें अक्सर के सभी फेल होते हैं। यह सबजेक्ट है भी बहुत सहज परन्तु कईयों को डिफिकल्ट फील होती है। सभी उनको शिव बाबा, शिव बाबा कहते हैं। अभी तुम समझते हो शिव बाबा सामने बैठा है। यह कोई उनका अपना शरीर नहीं है। उनको अपना शरीर ही नहीं। तुम भी आत्माएं हो निराकार। परन्तु शरीर साथ हो। बाप अपना शरीर कब लेते नहीं। मनुष्य फिर कह देते नाम-रूप से न्यारा है। कुछ भी है नहीं। इसलिए ही डिफिकल्ट समझ लिया है। बाप समझाते हैं कृष्ण को याद करने से कुछ भी मिलेगा नहीं। भल नम्बरवन स्वर्ग का प्रिन्स

है। उनको भी न जानने कारण उनको भी कहां2 रुला दिया है। कृष्ण के लिए भी कब कहते यशोदा का बच्चा, कब कहते रुक्मणी का, कब कहते देवकी का था। आखीरन भी किसकी बच्चा है। कितने मां-बाप दे दिये हैं। यह भी तो रांग है। बाप बैठ सभी बातें समझाते हैं। बाप कहते हैं तुम्हारी बुधि में भक्ति मार्ग का भूसा भरा हुआ है। अभी मैं तुमको ज्ञान देता हूं। भक्ति से कोई नई दुनिया में नहीं जाते। ज्ञान से तुम नई दुनिया के मालिक बनते हो। ज्ञान सागर जब आयेंगे तब तो पावन बन सकेंगे। भक्ति मार्ग है ही पतित। तब ही बाप को बुलाते हैं। हे पतित-पावन ... गांधी भी गाते थे। समझते थे गांधी राम राज्य स्थापन करते हैं। अभी भी समझते हैं वह रामराज्य बना कर गये। हमारा राज्य हो गया। वह फिरंगी लोग रावण थे। वह चले गये। कई तो इसमें ही खुश हैं। परन्तु यह कोई रामराज्य है थोड़े ही। कहां है स्वर्ग। यह ल0ना0 चैतन्य कहां हैं। तब ही कहें रामराज्य है। वह तो नई दुनिया होनी चाहिए। सभी कुछ सोने का होना चाहिए। यह तो और ही रावण राज्य तमोप्रधान हो गया है। फिर भी उन्हों के राज्य में इतने कंगाल नहीं थे। अनाज आद बहुत ही था। अभी तो कंगाल है। सभी अकल आद वहां से सीखते हैं। बाप समझाते हैं जो सतोप्रधान थे वही अभी तमोप्रधान बने हैं। तुम ने जितना सुख देखा है उतना और कोई ने नहीं देखा होगा। फिर तुम ही सब से ज्यादा दुःखी भी हुये हो। उन्हों की बुधि तो तीखी है। कितने सायंस आद निकालते हैं। अभी यह भी कहते हैं हम भी बम्ब बना सकते हैं। उन से भी अपने को तीखा समझते हैं। यह है सभी देह-अभिमान। बाप देही अभिमानी बनाते हैं। वह भी अपनी बुधि से मुशल आद निकालते हैं। अपने कुल के विनाश के लिए। बम्ब से उस तरफ खलास होंगे। यह कोई उनका कुल थोड़े ही है। वह है यादव कुल। यहांतो यवनों और हिन्दुओं की सिविल वार है। खून की नदी बहेगी। उसमें हाय हायकार होगा। बम्ब में हाहाकार की बात नहीं। बैठे2 अचानक हो खत्म। मुख से हाय2 निकलने का टाईम नहीं। गला ही बन्द जावेगा। हायहायकार के बाद जय जयकार होगा। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। अनेक बार यह चक्र फिरा। भक्ति मार्ग में है ही घोर-अंधियारा। अभी तक समझते रहे हैं 40हजार वर्ष पड़े हैं। बाप कहते हैं यह ड्रामा ही 5000वर्ष का है। अभी तुम समझावेंगे तब होजायेंगे। वह भी जायेंगे वही जो कल्प पहले गये थे। पढ़ाई में कब भी सभी एकरस पास नहीं हो सके। यह चक्र चलता ही रहता है। दिन-रात, सम्वत यह चलता ही रहता है। फिर भी पहला सम्वत होगा ना। अभी तुम पुरुषोत्तम संगम युगपर हो। वह कलियुग में हैं। यह बन्दर है। यह सभी है एडाप्टेशन रचना। पवित्र जरूर बनना है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। पुरुषार्थ भी नम्बरवार कर रहे हैं। कल्पपहले वही राजाई बनेगी। यह बातें बेहद के बाप बिगर कोई सुना न सके। फिर क्या करेंगे। क्या उनको थैंक्स देंगे। नहीं। बाप कहते हैं यह अनादी ड्रामा बना हुआ है। मैं कोई नई बात नहीं करता हूं। थैंक्स तो भक्तिमार्ग में देते हैं। टीचर कहेंगे अच्छी रीत पढ़ते हैं तो हमारा नाम बाला होगा। स्टुडेन्ट को थैंक्स दी जाती है। स्टुडेन्ट फिर बाप को थैंक्स देंगे। जो अच्छी पढ़ते-पढ़ाते हैं उनको थैंक्स देते हैं। बच्चे जीते रहो। ऐसे2 सर्विस करते रहो। कल्प पहले भी ऐसे की थी। फिर भी कह देते खबरदार रहना।